नईदुनिया

संपादकीय

युद्ध विस्तार की आशंका

छह माह से गाजा पट्टी पर इस्राइल की निरंकुश कार्रवाई के बाद दमिश्क में ईरान के वाणिज्य दूतावास पर हुए हमले की प्रतिक्रिया में इस्राइल पर हुए ईरानी हमले ने मध्यपूर्व के संकट को और गहरा दिया है। अब इस्राइल ईरान पर जवाबी कार्रवाई को अंजाम देने की तैयारी में जुटा है। ऐसे में पहले रूस-यूक्रेन युद्ध की मार झेल रही दुनिया गहरे आर्थिक संकट की चपेट में आ सकती है। शनिवार की रात ईरान ने तीन सौ से अधिक बैलिस्टिक मिसाइलों, क्रूज मिसाइलों व सैकड़ों ड्रोन के जरिये इस्राइल पर भीषण हमला किया था। हालांकि इस्राइल ने अपने सशक्त एअर डिफेंस सिस्टम से नब्बे फीसदी से अधिक हमलों को विफल कर दिया। जिसका जवाब देने के लिये इस्राइली तैयारियां चरम पर हैं। इस्राइल की आईडीएफ ईरान को घुटनों पर लाने की तैयारी में जुटी है। आशंका जतायी जा रही है कि इस्राइल ईरान के महत्वाकांक्षी परमाणु कार्यक्रम को निशाना बना सकता है।

उधर खाड़ी के देश युद्ध के विस्तार को लेकर खासे चिंतित हैं और अमेरिका को युद्ध से दूरी बनाये रखने को लेकर चेता रहे हैं। हाल ही में जिस तरह ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड ने हार्मूज जलडमरूमध्य में एक इस्राइली समुद्री जहाज को कब्जे में लिया है, उससे आशंका है कि इस संघर्ष से वैश्विक कच्चे तेल की आपूर्ति का बड़ा भाग प्रभावित हो सकता है। आशंका यह भी जतायी जा रही है कि यदि इस्राइल जवाबी कार्रवाई करता है तो युद्ध का विस्तार बड़े इलाके में हो सकता है।

अब संयुक्त राष्ट्र समेत वैश्विक बड़ी ताकतें चिंता जता रही हैं कि दुनिया अब एक नये युद्ध को सहन करने की स्थिति में नहीं है। सवाल उठाये जा रहे हैं कि जब इस्राइल आक्रामकता की सीमाएं लांघ कर पिछले छह महीने से गाजा पर लगातार हमले जारी रखे हुए था तो अमेरिका ने स्थिति नियंत्रण के प्रयास क्यों नहीं किये। ऐसा लगता है कि अमेरिका भी अब मध्यपूर्व के संकट में उलझता नजर आ रहा है। खाड़ी में उसके सहयोगी देश ईरान-इस्राइल संकट को बढ़ने से रोकने के लिये दबाव बना रहे हैं। उन्होंने अमेरिका को दो टूक शब्दों में कहा है कि उनके देश में बने सैन्य अड्डों का ईरान के खिलाफ कार्रवाई में इस्तेमाल करने से बचा जाए। जाहिरा तौर पर जिस तरह की भूमिका अमेरिका व उसके मित्र देश यूक्रेन युद्ध में रूस के खिलाफ निभा रहे थे, वैसी भूमिका रूस-चीन अब ईरान-इस्राइल संघर्ष में निभा सकते हैं। इन दोनों देशों के ईरान के साथ गहरे रिश्ते बने हुए हैं। निश्चित रूप से मध्य पूर्व का संघर्ष शेष विश्व के हित में नहीं है। वहीं इस्राइल ने ईरानी हमले के बाद उसके समर्थन से इस्राइल पर हमला करने वाले हिजबुल्लाह के सैन्य ठिकानों पर जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी है। दरअसल, ईरानी हमले के दौरान लेबनान से हिजबुल्लाह ने भी राकेटों से हमले किये थे। बहरहाल, विश्व समुदाय का फर्ज बनता है कि इस संघर्ष को और बढ़ने से रोके। इस्राइल को अपनी स्वतंत्रता की रक्षा का अधिकार है, मगर उसकी बेलगाम आक्रामकता को सहन नहीं किया जा सकता।

विकास और विरासत का बेहतरीन संतुलन 'मोदी की गारंटी' में

राजनीति

डॉ. राघवेंद्र शर्मा

भाजपा का तीसरा संकल्प समान नागरिक संहिता का था। वह भी उसने उत्तराखंड के रास्ते स्थापित करने का प्रण उजागर कर दिया है। अब जो संकल्प पत्र प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 14 अप्रैल को पढ़ा गया है, उसमें वादा किया गया है कि अगले कार्यकाल में हम समान नागरिक संहिता भी लागू करने जा रहे हैं। आशय स्पष्ट है भाजपा के तीन प्रमुख संकल्प थे। इनमें से पहले कालखंड में अनुच्छेद 370 को हटाया जाना समाहित माना जाए, तो दूसरे कालखंड की सौगात अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर को माना जा सकता है। जब भाजपा शासन के दो कालखंडों में अपने दो महत्वपूर्ण और असंभव से प्रतीत होने वाले संकल्प पूरे कर चुकी है, तब मतदाता को यह भरोसा करना ही चाहिए कि अब जब जनता भाजपा को तीसरे कालखंड का जनादेश देने जा रही है

देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा का संकल्प पत्र-मोदी की गारंटी नाम से जारी चुनाव घोषणा पत्र प्रस्तुत कर जहां एक ओर मतदाताओं के हृदय को स्पर्श करने में सफलता प्राप्त की है, वही विरोधियों के मुंह पर ताले जड़ दिए हैं। सभी प्रकार की आशंकाओं को परे रखते हुए उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि 04 जून के बाद इस गारंटी पर एक्शन प्लान शुरू कर दिया जाएगा। उनका यह कथन कि जिन्हें कोई नहीं पूछता उन्हें हम पूजते हैं यह प्रमाणित करता है कि यह संकल्प पत्र सुविधा की दृष्टि से अंतिम पायदान पर खड़े दरिद्र नारायण के लिए भी संभावनाओं के नए द्वार खोलता है। साथ ही यह भरोसा दिलाता है कि आम मतदाता को इस पर विश्वास करने में किसी भी प्रकार की शंका नहीं करनी चाहिए। ऐसा सोचने के लिए एक तर्क यह भी है कि अपने स्थापना काल से ही भारतीय जनता पार्टी जिन मुद्दों को लेकर संघर्ष करती आई है, सत्ता में आते ही उन्हें पूरा करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं दिखाया है।

किसने सोचा था कि हम कभी कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटते हुए देख पाएंगे। लेकिन भाजपा की मोदी सरकार ने यह करिश्मा तब कर दिखाया जब विरोधियों ने दावे किए थे कि ऐसा करने पर देश में भारी बवाल पैदा होगा, एक प्रकार से देश जल ही उठेगा। पूरे 500 साल हुए, जब से लाखों लोगों ने अयोध्या की श्रीराम जन्मभूमि को स्वतंत्र करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। मुगल तो हमारे दुश्मन और विदेशी लुटेरे थे। अत: उनका मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाना समझ में आता है। लेकिन आजाद भारत में हमारे देश की, हमारी अपनी धर्मनिरपेक्ष सरकारें राम जन्मभूमि स्वतंत्रता आंदोलन में अड़ंगे पैदा करती रहीं। अदालत में भगवान श्रीराम को इन्हीं सरकारों से संबंधित वकीलों ने कपोल कल्पित कहने में शर्म महसूस नहीं की। अयोध्या की सड़कें कार सेवकों के खून से लाल कर दीं और सरयू का पानी रक्त रंजित कर दिया। किंतु जैसे ही भाजपा सरकार में आई और मंदिर समर्थकों को अपना पक्ष रखने का अनुकूल वातावरण मिला, वैसे ही सर्वोच्च न्यायालय द्वारा श्रीराम जन्मभूमि स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी गई। आदेश सामने आते ही भाजपा शासित मोदी सरकार ने पल भर की देर नहीं लगाई और भव्य श्रीराम मंदिर का केवल शिला पूजन ही नहीं किया, वरन् भगवान की भव्यतम प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा भी करके दिखा दी।

भाजपा का तीसरा संकल्प समान नागरिक संहिता का था। वह भी उसने उत्तराखंड के रास्ते स्थापित करने का प्रण उजागर कर दिया है। अब जो संकल्प पत्र प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 14 अप्रैल को पढ़ा गया है, उसमें वादा किया गया है कि अगले कार्यकाल में हम समान नागरिक संहिता भी लागू करने जा रहे हैं। आशय स्पष्ट है भाजपा के तीन प्रमुख संकल्प थे। इनमें से पहले कालखंड में अनुच्छेद 370 को हटाया जाना समाहित माना जाए, तो दूसरे कालखंड की सौगात अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर को माना जा सकता है। जब भाजपा शासन के दो कालखंडों में अपने दो महत्वपूर्ण और असंभव से प्रतीत होने वाले संकल्प पूरे कर चुकी है, तब मतदाता को यह भरोसा करना ही चाहिए कि अब जब जनता भाजपा को तीसरे कालखंड का जनादेश देने जा रही है तब वह अपना तीसरा संकल्प समान नागरिक संहिता का भी पूरा करके दम लेगी। इसी के साथ यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि विरोधी लोग अपनी हार को सम्मुख देखते हुए भाजपा पर आरोप लगा रहे हैं कि वह केवल मंदिरों और देवलोकों की बात करके देश को भरमा रही है। जबकि सच यह है कि भारतीय जनता पार्टी तथा उसके द्वारा शासित विभिन्न प्रदेशों की सरकारें व केंद्र की मोदी सरकार विकास और विरासत को साथ लेकर नए भारत का ताना-बाना बुन चुकी हैं। उदाहरण के लिए जहां अयोध्या के श्रीराम मंदिर, वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर, दक्षिण भारत की पवित्र सैंगोल, मध्य भारत के महाकाल लोक, पश्चिमी भारत की द्वारकापुरी और पूर्वी भारत में मां काली के विराट प्रादुर्भाव की बातें की जाती हैं तो उन्हें साकार भी किया जाता है। इसी हमारे देश की सनातन विरासत को सहेजने का क्रम माना जाना चाहिए।

जहां तक विकास की बात है तो अब भारत में सुरक्षा का क्षेत्र आत्मनिर्भर हो चला है। औद्योगिक क्षेत्र में वैश्विक स्तर के बड़े-बड़े निर्माण मेकिंग इंडिया के तहत हमारे देश में ही हो रहे हैं। वंदेभारत के रूप में अत्याधुनिक ट्रेनों की व्यापक श्रृंखलाएं पूरे देश के यातायात को सुगम कर रही हैं। राष्ट्रीय नेशनल मार्गों की फोरलेन सिक्स लेन और अब आठ लेनों वाली श्रृंखलाएं तथा आश्चर्यचकित कर देने वाले फ्लाईओवर ब्रिज विकसित देशों को पीछे छोड़ चुके हैं। चीन और पाकिस्तान से सटे हुए सीमांत प्रदेशों में मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर दुश्मनों को चुनौती दे रहा है। देश के अधिकांश भागों में विद्युत आपूर्ति अब सहज सुलभ तथा अनेक प्रांतों में सरप्लस हो चुकी है। फलस्वरूप एक दशक पहले जब अत्यावश्यक कार्यों के लिए भी विद्युत उपलब्ध नहीं हो पाती थी, अब वहां लाखों इलेक्ट्रॉनिक वाहन सरप्लस बिजली से रिचार्ज होकर विदेशी ईंधन से मुक्ति पा रहे हैं।

यही नहीं, अब बिजली बिल जीरो करने की कवायद का भी ऐलान हुआ है। जिसके तहत पीएम सूर्य योजना में एक करोड़ रजिस्ट्रेशन किए जा चुके हैं। 24 जून के बाद इस मामले में गति और तेज होने जा रही है, जिससे हम खुद बिजली उत्पादक बनेंगे। अपने उपयोग की बिजली इस्तेमाल करने के बाद जो बचेगी उसे सरकार को बेच भी पाएंगे। यानी आम के आम गुठलियों के दाम। कोरोना के बाद जहां अनेक देशों की अर्थव्यवस्था पटरी से उतर गई। वहां लोग रोटी के लिए भी मोहताज हो गए। तब भारत की भाजपा शासित मोदी सरकार ने न केवल वैक्सीनेशन का कीर्तिमान बनाया बल्कि वह दूसरे देशों को भी उपलब्ध कराई। इसके बावजूद भी अपनी अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण बनाए रखा। कांग्रेस ने 70 के दशक में गरीबी हटाओ का नारा दिया था। जबकि सच्चाई यह है कि इस पार्टी ने और इसके अन्य धर्मनिरपेक्ष साथी दल अपनी और अपने शीर्ष परिवारों की अमीरी बढ़ते रहे। जबकि भाजपा शासित मोदी सरकार ने चार करोड़ परिवारों को प्रधानमंत्री आवास मुहैया कराए। 80 करोड़ लोगों को मुफ्त भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की और तन ढकने के लिए कपड़े को भी मूल्य की दृष्टि से नियंत्रण में बनाए रखा। इस प्रकार रोटी, कपड़ा और मकान की जो संकल्पना थी उसे व्यवस्थित कर दिखाया। सोने पर सुहागा यह कि नए संकल्प पत्र में प्रधानमंत्री मोदी ने 3 करोड़ प्रधानमंत्री आवास अतिरिक्त बनाने का संकल्प जाहिर कर दिया है।

चैत्र नवरात्र में अष्टमी और नवमी पर ऐसे करें हवन, सुख-समृद्धि की होगी प्राप्ति

ऐसा माना जाता है कि चैत्र नवरात्र के दौरान आदिशक्ति के नौ रूपों की आराधना करने से साधक के सभी दुख-दर्द दूर होने लगते हैं। अष्टमी और नवमी तिथि पर हवन और कन्या पूजन के साथ नवरात्र का समापन होता है। ऐसे में आइए जानते हैं कि अष्टमी और नवमी तिथि पर किस तरह से हवन करना चाहिए। चैत्र नवरात्र का त्योहार लोग अधिक धूमधाम के साथ मनाते हैं। इस बार चैत्र नवरात्र की शुरुआत 09 अप्रैल से हुई है और इसका समापन 17 अप्रैल को होगा। नवरात्र के नौ दिन दिनों तक मां दुर्गा के अलग-अलग के रूपों की पूजा और व्रत किया जाता है। इसके बाद अष्टमी और नवमी तिथि पर नौ कन्या का पूजन करने की परंपरा है। इस पूजन को कंजक पूजन के नाम से जाना जाता है। कन्या पूजन के दौरान हवन भी किया जाता है। इस बार अष्टमी 16 अप्रैल को और नवमी 17 अप्रैल को है। मान्यता है कि अष्टमी और नवमी तिथि पर सही प्रकार से हवन करने से साधक को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है और मां दुर्गा प्रसन्न होती हैं। ऐसे में चलिए जानते हैं कि अष्टमी और नवमी पर हवन करने की विधि के बारे में।

अष्टमी और नवमी हवन विधि : अष्टमी या नवमी तिथि पर ब्रह्म मुहूर्त में उठें और मां दुर्गा का ध्यान करें। इसके बाद स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। अब हवन कुंड बनाएं या आप मार्किट से बना हुआ हवन कुंड भी ला सकते हैं। देशी घी का दीपक और धूप जलाएं। कुंड पर स्वास्तिक बनाकर विधिपूर्वक मां दुर्गा के नौ रूपों की उपासना करें। इसके बाद हवन कुंड में आम की लकड़ी से अग्नि जलाएं और अग्नि में सामग्री, शहद समेत आदि चीजों की मंत्रों के जाप के साथ की आहुति दें। इसके बाद जीवन में सुख और शांति के लिए मां दुर्गा से प्रार्थना करें।

हवन सामग्री : हवन के लिए आपको एक गोला या सूखा नारियल, मुलैठी की जड़, कलावा, एक हवन कुंड, लाल रंग का कपड़ा, अश्वगंधा, ब्राह्मी और सूखी लकड़ियां, चंदन की लकड़ी, बेल, नीम, पीपल का तना, आम की लकड़ी, छाल, गूलर की छाल, पलाश शामिल हैं। इनके अतिरिक्त काला तिल, कपूर, चावल, गाय का घी, लौंग, लोभान, इलायची, गुग्गल, जौ और शक्कर।

हवन करते समय इन मंत्रों के साथ दें आहुति

ऊं आग्नेय नम: स्वाहा
ऊं गणेशाय नम: स्वाहा
ऊं गौरियाय नम: स्वाहा
ऊं नवग्रहाय नम: स्वाहा
ऊं दुर्गाय नम: स्वाहा
ऊं महाकालिकाय नम: स्वाहा
ऊं हनुमते नम: स्वाहा
ऊं भैरवाय नम: स्वाहा
ऊं कुल देवताय नम: स्वाहा
ऊं न देवताय नम: स्वाहा
ऊं ब्रह्माय नम: स्वाहा
ऊं विष्णुवे नम: स्वाहा
ऊं शिवाय नम: स्वाहा

ऊं जयंती मंगलाकाली, भद्रकाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा
स्वधा नमस्तुति स्वाहा।
ऊं ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरांतकारी भानु: शशि भूमि सुतो बुधश्च: गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतव सर्वे ग्रहा शांति करा भवंतु स्वाहा।
ऊं गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवा महेश्वर: गुरु साक्षात् परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नम: स्वाहा। ऊं शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे, सर्व स्थार्ति हरे देवि नारायणी नमस्तुते।

नवरात्रि में कन्या पूजन का क्यों है महत्व ? जानिए पूजन विधि और किन बातों का रखें ध्यान

नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा की कृपा पाने के लिए हम कन्या पूजन करते हैं जिससे जीवन में भय, विघ्न और शत्रुओं का नाश होकर सुख-समृद्धि आती है। इन कन्याओं में मां दुर्गा का वास रहता है। कन्या पूजन नवरात्रि पर्व के किसी भी दिन या कभी भी कर सकते हैं। लेकिन अष्टमी और नवमी को कन्या पूजन के लिए श्रेष्ठ माना गया है। इसके अलावा कन्या पूजन से समाज में नारी शक्ति को सम्मान मिलता है।

शक्ति का साक्षात स्वरूप हैं कन्याएं : नवरात्रि में कुमारी पूजन का बहुत महत्व है। दो वर्ष से दस वर्ष तक की कन्याओं का इस व्रत में पूजन करना चाहिए। देवी भगवत पुराण के अनुसार कन्या के जन्म का एक वर्ष बीतने के पश्चात कन्या को कुंवारी की संज्ञा दी गई है। अत: दो वर्ष की कन्या को कुमारी,तीन वर्ष की कन्या को त्रिमूर्ति,चार वर्ष की कल्याणी,पांच वर्ष की रोहिणी, छह वर्ष की कलिका,सात वर्ष की चंडिका,आठ वर्ष की शाम्भवी,नौ वर्ष की दुर्गा तथा दस वर्ष की कन्या सुभद्रा के सामान मानी जाती हैं। धर्मग्रंथों के अनुसार तीन वर्ष से लेकर दस वर्ष की कन्याएं साक्षात शक्ति का स्वरुप मानी गई हैं। दुर्गा सप्तशती में कहा गया है कि दुर्गा पूजन से पहले भी कन्या का पूजन करें ,तत्पश्चात ही माँ दुर्गा का पूजन आरम्भ करें।

कन्या पूजन विधि : कन्याओं का पूजन करते समय सर्वप्रथम शुद्ध जल से उनके चरण धोने चाहिए। तत्पश्चात उन्हें स्वच्छ आसन पर बैठाएं। खीर, पूरी, चने, हलवा आदि सात्विक भोजन का माता को भोग लगाकर कन्याओं को भोजन कराएं। कन्याओं को सुमधुर भोजन कराने के बाद उन्हें टीका लगाएं और कलाई पर रक्षासूत्र बांधें। प्रदक्षिणा कर उनके चरण स्पर्श करते हुए यथाशक्ति वस्त्र, फल और दक्षिणा देकर विदा करें। इस तरह नवरात्रि पर्व पर कन्या का पूजन करके भक्त मां की कृपा पा सकते हैं।

कन्या पूजन में इन बातों का रखें ध्यान : देवीभागवत पुराण के अनुसार कुमारी पूजन के लिए कन्याएं रोग रहित होनी चाहिए। जो कन्या किसी अंग से हीन हो,कोढ़ या घावयुक्त हो,अंधी,कानी,कुरूप,बहुत रोमवाली या रजस्वला हो-उस कन्या का पूजन नहीं करना चाहिए। 9 कन्याओं के साथ कम से एक बालक जरूर होना चाहिए। जिसे कन्या पूजन में बैठाना चाहिए। दरअसल शास्त्रों में बालक को भैरव का रूप माना जाता है। कन्याओं के विदा होने के बाद तुरंत ही घर की साफ-सफाई नहीं करनी चाहिए। कन्याओं के लिए जो भोजन बनाएं, उसमें भूलकर भी लहसुन-प्याज का प्रयोग न करें।

आजकल

साफ्टवेयर के जरिए फोन में सेंधमारी

साइबर सेंधमारी से लेकर डीपफेक आदि पहले ही भारत जैसे देश में एक गंभीर समस्या के रूप में सामने है, जिससे पार पाना सरकार के लिए बड़ी चुनौती है। ऐसे में अगर पेगासस जैसे साफ्टवेयर के जरिए जासूसी और सेंधमारी का मामला सिद्ध होता है, तो यह ज्यादा गंभीर बात होगी। अब एक बार फिर जासूसी का जिन्न बोतल से बाहर निकल आया लगता है। दुनिया के सबसे सुरक्षित मोबाइल फोन और कंप्यूटर बनाने का दावा करने वाली कंपनी एप्पल ने अपने उत्पाद का उपयोग करने वालों को संदेश भेजा है कि उनके फोन में पेगासस जासूसी साफ्टवेयर के जरिए सेंधमारी की जा सकती है, इसलिए सावधान रहें।

यह संदेश उसने मेल के जरिए भारत सहित इक्यानबे देशों के लोगों को भेजा है। करीब छह महीने पहले भी उसने भारत के कुछ लोगों को चेतावनी भेजी थी कि उनका फोन पेगासस के निशाने पर हो सकता है। उनमें ज्यादातर लोग विपक्षी दलों के नेता थे, इसलिए इसे लेकर काफी हंगामा हुआ था। मगर सरकार के दबाव में तब एप्पल ने अपनी उस चेतावनी को बहुत धुंधला कर दिया था। इस बार उसने बहुत गंभीरता और भरोसे के साथ अपने ग्राहकों को चेतावनी दी है कि आपके फोन को 'मर्सीनरी स्पाईवेयर' के जरिए निशाना बनाया जा रहा है। हालांकि उसने उन लोगों के नाम उजागर नहीं किए हैं, जिनके फोन में इस जासूसी साफ्टवेयर के जरिए सेंधमारी के तथ्य उसे हाथ लगे हैं। मगर कंपनी ने माना है कि इस तरह के हमले दुनिया भर हो रहे हैं।

अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब एप्पल के अत्यंत सुरक्षित माने जाने वाले फोन में सेंधमारी की जा रही है, तो बाकी एंड्रायड से चलने वाले फोनों की सुरक्षा का क्या हाल होगा। चूंकि एप्पल का सारा कारोबार इसी विश्वास पर टिका हुआ है कि उसके फोन और कंप्यूटर में कोई सेंधमारी नहीं कर सकता, उसके लिए भी यह बड़ी चुनौती बन चुका है। एप्पल ने माना है कि यह घुसपैठ किसी सामान्य साइबर सेंधमार के वश की बात नहीं है, क्योंकि जिस साफ्टवेयर के जरिए यह हमला किया जा रहा है, उस पर लाखों डालर का खर्च आता है और उसे लेना सबके बूते की बात नहीं। एप्पल इस साफ्टवेयर से पार पाने का कोई इंतजाम कर पाएगी या नहीं, यह तो वक्त बताएगा, मगर दुनिया की तमाम सरकारें अब फिर से लोगों की निजता में सेंध लगाने को लेकर निशाने पर आ जाएंगी। करीब तीन साल पहले भारत में जब पेगासस के इस्तेमाल की बात सामने आई थी, तब खासा बवाल मचा था। सर्वोच्च न्यायालय में कई अपीलें दायर की गई थीं। यह साफ्टवेयर इजराइल की सरकार बेचती है और उसका कहना है कि वह इसे किसी स्वतंत्र व्यक्ति या कंपनी को नहीं बेचती, बल्कि सरकारों को देती है। इसलिए भी यह मामला ज्यादा गंभीर बन गया था।

लोकसभा चुनाव में मर्यादा लांघते नेताओं के बयान

मुद्दा

सुरेश हिन्दुस्तानी

देश में लोकसभा चुनाव प्रचार में राजनीतिक दलों में बयानों की आंधी सी चल रही हैं। ऐसे में सभी राजनीतिक दल अपने आपको आम जनता का हितैषी सिद्ध करने का प्रचार कर रहे हैं। इन बयानों में कहीं-कहीं राजनीति की मर्यादा का भी उल्लंघन भी होता दिख रहा है। चुनाव प्रचार के दौरान सभी दल अपने-अपने हिसाब से ढोल पीटकर जनता को अपने पाले में लाने की कवायद कर रहे हैं। राजनीतिक दलों के बयान सुनने में अप्रमाणिक से लगते हैं। अभी बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव की बेटी मीसा भारती ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लेकर जो बयान दिया है, वह उनकी राजनीतिक मजबूरी हो सकती है, लेकिन यह भी सही है कि इस बार के चुनाव में विपक्ष, सत्ता पक्ष पर किसी प्रकार का ठोस आरोप नहीं लगा पा रहा है। जहां तक चुनावी चंदे के भ्रष्टाचार की बात है तो इस खेल में सभी दल शामिल हैं। कहने का तात्पर्य है राजनीति में जो सुना जाता है, वह होता नहीं है। परदे पर कुछ और दिखाने का प्रयास करते हैं, वास्तविकता कुछ और होती है। कौन नहीं जानता कि विपक्ष के कई नेता भ्रष्टाचार के आरोप में जमानत पर हैं। ऐसे में बयान देने से पहले नेताओं को अपने गिरेबां में झांक कर भी देख लेना चाहिए।

वर्तमान में एक और बात महत्वपूर्ण यह भी है कि राजनीतिक दल धरातल पर बाहुबल और धनबल के सहारे चुनाव जीतने का प्रयत्न करते हैं। जबकि यह सब इतनी सावधानी से किया जाता है कि दिखाई नहीं देता, लेकिन आम जनता को यह मालूम है कि वास्तविकता क्या है। सारे चुनाव की छिपी हुई हकीकत यही है कि चुनाव में पैसा पानी की तरह प्रवाहित किया जाता है जो लोग पैसे की भाषा नहीं समझते, उन्हें समझाने के दूसरे तरीके अपनाए जाते हैं, यानी बाहुबल का सहारा लिया जाता है। हालांकि इस सत्य को राजनेता इतनी सफाई से करते हैं कि कोई भी संस्था इसे सिद्ध नहीं कर सकती

वर्तमान में एक नई प्रकार की राजनीति का उदय हुआ है, उसके अंतर्गत अपने दल की कार्यप्रणाली का या कहा जाए कारगुजारियों का बखान कम, दूसरे दलों की छीछालेदर करना ज्यादा ही देखने में आ रहा है। इस प्रकार का खेल कांग्रेस सहित विपक्षी दल की ओर से कुछ ज्यादा ही चल रहा है। कारण साफ है कि कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल भ्रष्टाचार के बारे में ज्यादा बोल नहीं सकती। क्योंकि कांग्रेस की सरकार में मंत्रियों और कांग्रेसी नेताओं ने जिस प्रकार से भ्रष्टाचार के कारनामे किए, उससे देश को करोड़ों का नुकसान हुआ। आज देश पर जो आर्थिक बोझ आया है, उसके पीछे के कारणों में यह भ्रष्टाचार एक है। आज की राजनीति को देखकर सहज ही यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक बयान मर्यादा को लांघ रहे हैं। विपक्ष की ओर से आधारहीन तर्क किए जा रहे हैं। कोई लोकतंत्र को बचाने की राजनीतिक बयानबाजी कर रहा है तो कोई संविधान बचाने का प्रहसन कर रहा है। खास बात यह है कि यह सब वे लोग कर रहे हैं जो भ्रष्टाचार समाप्त करने के कहकर भ्रष्टाचार करते रहे हैं। लालू प्रसाद यादव पर भ्रष्टाचार का आरोप सिद्ध हो चुका है, लेकिन उनकी बेटी प्रधानमंत्री पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा रही है। वर्तमान में भारत की राजनीति में प्रतिद्वंद्व छिड़ा हुआ है। राजनीति में जिस प्रकार का वाद प्रतिवाद चल रहा है वह या तो मूर्ख बनने की प्रक्रिया का हिस्सा है या फिर मूर्ख बनाने की। अब आज के हालात में कौन मूर्ख बनता है और कौन बनाता है, यह भविष्य के गर्भ में छिपा है। जैसे ही समय की सीमा पूरी हो जाएगी, इसके पीछे का अर्थ सामने आता चला जाएगा। आज हमारे देश की राजनीति में नेताओं के कई रूप देखने को मिल जाते हैं, यानी जैसी स्थिति होती है नेता लोग अपने को वैसा ही प्रचारित करने लग जाते हैं। इसको और व्याख्या करके कहा जाए तो तर्कसंगत ही होगा कि हमारे नेता बहुरूपिया बन जाते हैं और भारत देश की भोली भाली जनता उनके इस नकली रूप को देखकर भ्रमित हो जाती है। देश भर में सारे नेता इस होड़ में आगे दिखने का प्रयास कर रहे हैं कि हम ही जनता के असली हितैषी हैं। नेताओं का यह रूप हमारे देश को किस दिशा में ले जाएगा या ले जा रहा है, पता नहीं। पर यह सत्य है कि यह खेल बहुत ही खतरनाक है।

देश के भविष्य के साथ एक प्रकार का अनहोना अपराध है। भारत की राजनीति में आज ऐसे परिवारवादी नेता उदित हो चुके हैं, जिन्हें ठीक से भारत की राजनीति करना नहीं आता, वे केवल सत्ता प्राप्त करने के लिए ही जनता के वोट प्राप्त करने का उपक्रम ही करते हैं। भारत की जनता के समक्ष ऐसे हालात बन गए हैं कि वह सही और गलत की पहचान भी नहीं कर पा रहे हैं।